[Jain *, Vol.4 (Iss.9): September, 2016]
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

मराठा क्षेत्र में चित्रकला का विकास

डॉ. सुषमा जैन[*1]
[*1] प्राचार्य शुभांकन फाईन आर्टस् कालेज इन्दौर (म.प्र.)

DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v4.i9.2016.2553

Cite This Article: डॉ. सुषमा जैन. (2016). "मराठा क्षेत्र में चित्रकला का विकास." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 4(9), 198-202.

1. भूमिका

मराठा क्षेत्र में चित्रकला परंपरा का प्रारंभ प्रागैतिहासिक काल से होता है। मानव ने बहुत ही प्रांरभ में व्यवहार की सजगता के साथ चित्रों के उदाहरण छोड़े हैं। मध्यप्रदेश की आदिम कंदराओं में हमें उस बर्बर पर सुसंस्कृत और सुअलंकृत होने की लालसा के अनुगामी मानव के रचे अनेक रेखीय चिन्ह तथा अस्त्र शस्त्रों के सौंदर्य प्रधान रूप आज हमें आश्चर्य चकित करते है।[1]

मराठा क्षेत्र प्रागैतिहासिक चित्रकला में अति समृद्ध हैं, यहां भोपाल, होशंगाबाद भीमबेटका, सुजानपुरा, हिंगलाजगढ़, गांधीसागर बांध, चिब्बड़ नाला, इन्द्रगढ़, मंदसौर, मोढ़ी, शिवपुरी, चोरपुरा, केदारेश्वर आदि अनेक स्थानों पर प्रागैतिहासिक शैल चित्र मिले है।

होशंगाबाद क्षेत्र में आदमगढ़ पहाड़ी की अनेक शिलाओं पर आदिम शैली के चित्र अंकित हैं, यहां अंकित चित्रों में हल्के पीले रंग वाले विशालकाय हाथी, दोहरी रेखाओं में चित्रित महामहिष जो 10 फीट लंबा व 6 फीट चौड़ा है। पीले हाथी शिरोभाग पर अंकित जिराफों का झुण्ड आदि के चित्र विशेष उल्लेख्य है। इस शिलाश्रय पर विभिन्न युगों एवं शैलियों में किये गये चित्रण के पांच छः स्तर एक साथ लक्षित होते है।[2]

इस क्षेत्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध चित्र भोपाल से 10 कि.मी. दूर दक्षिण में भीमबेठका नामक स्थान की प्राकृतिक गुफाओं में मिले हैं। इन गुफाओं की खोज डॉ. वि. श्री. वाकणकर द्वारा सन् 1957 में गयी थी तथा बाद में सन् 1971 में विक्रम विश्वविद्यालय के तत्वावधान में खोज प्रारंभ हुई। श्री वाकणकर जी ने अपने साथियों के साथ 1700 से अधिक शैलाश्रय खोजे।[3] यहां पर आदि मानव द्वारा चित्रित अनेंकों चित्र प्राप्त हुए। इनमें पीले, लाल, श्वेत रंगों के अतिरिक्त कहीं–कहीं हरे रंग का भी प्रयोग है। चित्रों में प्रायः हाथी, अश्व, गैंडा, चीता, जंगली गाय, बैल, महिष, जल जन्तुओं, अश्वारोहण, हाथी घोड़ो के जुलूस, आखेट, नृत्य एवं व्यवस्थित सामुहिक जीवन का अंकन हुआ है।[4] श्री वाकणकर के मतानुसार यहां के चित्र आठ–दस हजार वर्ष प्राचीन हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

चंबल घाटी स्थित चिब्बड़ नाला तथा सीताखर्डी में भी चित्रित शैलाश्रय मिलते हैं ये दोनों हिंगलाजगढ़ किले के आसपास हैं जो भानपुरा से अधिक दूर नहीं है। यहां चित्र हल्के व गहरे गेरूए रंग में अंकित हैं और शैली भेद के आधार पर विविध काल खण्डों में रखे जा सकते है।[5]

मंदसौर जिले में मोरी स्थान पर बने दरी चित्र भी बड़े प्रसिद्ध हैं। यहां पर 30 पहाड़ी खोह हैं, जिनमें अनेक चित्रण हैं। उनमें मुख्य रूप से स्वस्तिक, चक्र, सूर्य, सर्वतोभद्र, अष्टदंल, कमल व पीपल की पत्तियों के प्रतीकात्मक चिन्ह हैं। देहाती बांस की गाड़ियां भी यहां दिखाई गयी है। यहां अनेक पशु, नृत्यरत मानव और ग्वाले पशुओं को हांकते दिखाये गये है।।[6]

यह सभी चित्र अंगुली या चबाई गई लकड़ी अथवा पक्षियों के पंखो द्वारा बनाई वर्तिकाओं से रचे गये। गुहामानव की कल्पना शक्ति एवं अभिव्यक्ति की अदम्य जिजिविषा इन चित्रों में दृष्टव्य है। इसके बाद मानव का विकास क्रम निरंतर अबाध गति से होता गया और चक्के का अविष्कार हुआ। मध्य भारत में जिसे हम मालवा क्षेत्र कह सकते हैं, यहां से हमें काले, लाल मृद्भाँड मिले हैं और गेरूए मृद्भाँड भी प्राप्त हुए इनमें उपर का भाग चित्रित होता था, इन पर गोलाकार, चौकोण, त्रिकोण तथा बाद में धार्मिक चिन्ह जैसे स्वस्तिक, सूरज, बैल तथा मोर भी अंकित किये गये।

मालवा क्षेत्र की चित्रकला जैसा कि हम जानते हैं पाषण युग से ही इसकी गौरवशाली परंपरा रही है। इस परंपरा में सबसे उत्कृष्ट काल गुप्तकाल माना जाता है। जिसका उदाहरण बाघ की गुफाओं में प्राप्त होता है। देखा जाये तो इतिहास में 9वीं से 5वीं शताब्दी तक का काल चित्रकला की तकनीक में अधिक विकसित नहीं माना जा सकता किन्तु शक, सातवाहन तथा शुंग काल में देखा जाये तो शिल्पकला का अधिक किन्तु साथ ही चित्रकला का भी विकास हुआ इस समय शारीरिक हाव–भाव दिखाने की चेष्टा की गई।

इसके बाद कुषाण काल में चित्रकला का और अधिक विकास हुआ।[7] कालिदास की कविताओं से चित्रकला में सौंदर्य बोध जागृत हुआ और कलाकारों का क्षेत्र और विस्तृत हुआ।

6 वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक एक भी चित्र स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर नहीं होता बाघ की गुफायें भी 7वीं से 11वीं सदी के बीच की मानी जाती है। बाघ की गुफाएँ गुप्त कला की श्रेष्ठ उदाहरण है, इन्हें अजन्ता के उत्तरकालीन विहारों की समकालीन माना जा सकता है।[8] कुछ विद्वान इनका निर्माणकाल 5 वीं 6 टी शताब्दी को मानते हैं। ये गुफाएँ ग्वालियर जिले के अंतर्गत आती हैं। पास ही नर्मदा की एक छोटी सी करद नदी, जिसका नाम बाघ है बहती है। संभवतः इसी कारण पास के गांव तथा इन गुफाओं का नाम बाघ पड़ा है। यहां कुल नौ गुफाएँ है जिसका सामना साढ़े सात सौ गज लंबा है। बाघ की गुफाओं के सबसे अच्छे चित्र चौथी और पांचवी गुफा के बाहरी बरामदे की भीतरी दीवार या गुफाओं के सामने की दीवार पर उपर के भाग में सुरक्षित थे। परन्तु बरामदे की छत गिर जाने से पर्याप्त चित्र नष्ट हो गये है।[9]

यहां के चित्रो की शैली अजंता से भिन्न नहीं हैं एवं वहां के पूर्व मध्यकालीन चित्रों की तुलना में ये उन्नीस भी नही बैठते। इनमें मुंह ढककर रोती हुई एक स्त्री का चित्र जिसे उसकी सखी सांत्वना दे रही है बड़ा भावपूर्ण है। एक दृश्य नृत्य समाज का है जिसे नाचने वाली मण्डल बांधकर छोटे–छोटे डंडे लड़ाकर नाच रही है। इस आलेखन में यथेष्ट गति और रमणीयता है। यहां सवारी का भी एक चित्र है जिसमें हाथियों का दल बड़ा भव्य है। यहां के अलंकरण अंजता जैसे नही है किंतु यहां कमल की झुरमुट वाली बेल में वहां से अधिक प्रवाह है।[10]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

12वीं शताब्दी के बाद मालवा में जब परमार राजाओं का शासन हुआ तब कुछ चित्र युद्ध के बने इन सब चित्रों में परम्परागत शैली उपयोग में लायी गयी, जिसमें चौड़ा माथा, तीखी नाक, दाड़ी मूंछ तथा लंबी आंखे बनाई गई। इसके बाद जैन ग्रंथ कल्पसूत्र पर बहुत अधिक लघु चित्र बने जो कि, सर्वप्रथम ताड़ के पत्तों पर लिखी गई थी। 15वीं शताब्दी तक अलग–अलग स्थानों पर कल्पसूत्र पर कई चित्र बने। इन चित्रों में चेहरा विशिष्ट प्रकार से बनाया जाता था। मुखाकृति एक चश्म तथा आंखे बड़ी–बड़ी कोरों से बाहर निकलती सी प्रतीत होती। यह शैली को कुछ समय तक मालवा की कला में अपना विशिष्ट स्थान बनाये रखती है। इसके उपरांत मालवा में अहमद नगर तथा दक्षिण का प्रभाव प्रमुख हो जाता है। फिर भी इस शैली की वर्ण योजना में विभिन्न प्रकार की लाल, गहरे तथा श्यामता लिये हुए नीले एवं कोमल हरे रंगो का प्रभाव बना रहता है।[11] प्राचीन मालवा प्रदेश के अंतर्गत ग्वालियर, उज्जैन, इन्दौर, माण्डू तथा धार सम्मिलित थे।

13 वीं से 15 वीं शती तक यहां तुर्की राज्य रहा, तत्पश्चात् पठानों का 1561 से 18 वीं शताब्दी पर्यन्त यह मुगलों के अधीन रहा। समय–समय पर यहां मराठों ने भी कुछ स्थानों पर अधिकार कर लिया था।[12]

इस प्रकार इन समस्त युगों में अनेक धर्म एवं संस्कृतियों का प्रभाव यहाँ की कला पर पड़ा। मध्य भारत के पूर्व में अवध तथा जौनपुर, उत्तर में राजस्थान, दक्षिण में मुस्लिम शासन और पश्चिम में गुजरात के राज्य थे इन विभिन्न राज्यों की संस्कृति का मालवा में समन्वय हुआ।

1505 ई. में नियामतनामा का चित्रण हुआ चित्रों में शीराज की तुर्कमान शैली के साथ किंचित भारतीय लक्षण भी मिलते है।

1554 ई. में बाजबहादुर को मालवा की सत्ता सौंप दी गयी। बाजबहादुर उच्चकोटि का कवि तथा संगीत का ज्ञाता था। वह फारसी, अवधि, तथा हिन्दी भाषाओं का अच्छा जानकार था। रूपमती के साथ उसकी प्रणय गाथा लोक प्रसिद्ध है। बाजबहादुर के काल में चित्रकला की माण्डू शैली का विकास हुआ। माण्डू शैली का प्रथमचरण इसी काल में शुरू हुआ। दूसरा चरण नरसिंहगढ़ से शुरू हुआ। संस्कृत की 'अमरू शतक' के चित्र भी हमें मालवा शैली के प्राप्त हुए है।

1439 के जैन अभिलेख में हमें यह पता चलता है कि, जैन चित्रकला और मध्य भारत की चित्रकला ने एक दूसरे पर किस तरह प्रभाव डाला। इसके बाद हमें कला पर ईरानी चित्रकला का प्रभाव देखने को मिलता है। 17वीं शताब्दी में कई प्रेम कविताओं के उपर भी लघुचित्र बने। इसके अलावा रागमाला, बारहमासा, रसिकप्रिया आदि पर भी मालवा शैली में चित्र बने 17वीं शताब्दी में मालवा कलम में पुरूषों को हरे रंग का बनाया गया। और जो जामा पुरूषों को पहनाया गया उसकी सल वाली आस्तीन है और स्त्रीयों ने जो घाघरा पहना उसमें चौड़ी पट्टी है।

इस तरह 17वीं शताब्दी का मालवा चित्रकला में अल्पमात्रा में ही चित्र मिले हैं, क्योंकि यह राजनैतिक अस्थिरता का दौर था इसके अलावा 1660 से 1680 शती के मध्य मुगलों ने चित्रकला प्रतिबंधित करवा दी थी।

मालवा क्षेत्र में बनने वाले चित्रों में भागवत पुराण (1686–1688 ई.) एक अन्य भागवत प्रति (1590 ई.) तथा दुर्गापाठ, रागमाला, कृष्णलीला व रसिकप्रिया जैसे विषयों पर अनेकानेक चित्र साफगोई से बनाये गये।[13]

अकबर से लेकर लगभग 17 वीं शताब्दी के अंत तक मालवा में राजनैतिक स्थिरता बनी रही।[14] मालवा में मराठों का प्रथम आक्रमण 1699 में हुआ।[15] पेशवा बाजीराव प्रथम ने मराठा राज्य स्थापित करने के लिए

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

मुगलों से अनेक युद्ध किये तत्पश्चात् पेशवा ने सिंधिया और होलकर को मालवा का प्रशासन सौंप कर अपनी मुहर भी उन्हे दे दी थी।[16]

इस प्रकार मालवा में मुगल मराठा संघर्ष का अंत होकर एक नये युग का सूत्रपात हुआ। पेशवा के तीनों मराठा सरदारों राणोजी सिंधिया, मल्हारराव होल्कर और यशवन्तराव पंवार ने क्रमशः ग्वालियर, महेश्वर (बाद में इन्दौर) तथा धार में मराठा राज्य की स्थापना की।

मध्य भारत क्षेत्र में मराठा सरदारों का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो जाने पर सभी शासको ने अपने–अपने राज्य में विभिन्न कलाओं को प्रोत्साहन एवं संरक्षण दिया।

महादजी सिंधिया कला के बड़े संरक्षक थे। भारत इतिहास संशोध मंडल ने अलग–अलग समूह में उनके अनेक चित्र एकत्रित किये है। उन्होंने राजस्थान तथा उत्तर के शासको से संपर्क कर अनेक चित्रकारों को सेवा में लिया। तत्पश्चात् इन कलाकारों के वारसदारों ने काम किया है।[17]

एक चित्र जिसमें महादजी, कलन्दर खान तथा मोफन, गवैये का संगीत सुन रहे है। यह चित्र 1780 ई. का अंकित है। इसमें पखावज वादक का भी चित्रण किया गया है। महादजी के दाहिने आबाजी रघुनाथ चिटनिस तथा मिर्जा अब्दुल रहीम बैठे दिखाई दे रहे है। इसके ठीक पीछे सालेराव गोविन्द दीवाने बैठे है, शेखूजी साहब पीछे खड़े हैं। आगे एक परदा तह किया हुआ है। इस चित्र में आंखे व चेहरा कोटा की विशिष्ट शैली में चित्रित है।

कोटा शैली का एक और चित्र घोड़े पर सवार हाथ में फूल लिये हुए चेहरे पर भाव स्पष्टीकरण वाला प्रकाशित जयाजी अप्पा सिंधिया का चित्र मिलता है।[18]

महादजी ने युरोपियन चित्रकारों से भी चित्रण करवाया था। अज्ञात इटालियन कलाकार द्वारा चित्रित उनका मृत्यु पूर्व का एक चित्र है। यह तैलचित्र लगभग 2x1½ का सर ग्रान्ट के पास था।[19] जयाजी व अन्य वारसदारों के साथ चित्रित दौलतराव का चित्र ग्वालियर में पाया गया है।

होल्कर शासक भी इस कला के संरक्षक रहे है। मालवा शैली में मल्हारराव का चित्र पाया गया है।[20] जो दर्शाता है कि, उस समय कलाकरों को शाही संरक्षण प्राप्त था। कोटा शैली में एक अन्य चित्र भी मल्हारराव का पाया गया है जो यह दर्शाता है कि, उस समय यह शैली वहां मौजूद थी।[21]

देवास में पवार शासको का राज्य था कृष्णा जी प्रथम, तुकोजी प्रथम, रूकमांगदराव पवार के व्यक्ति चित्र उपलब्ध है। देवास राज्य के छोटी पांती के शासको के भी चित्र उपलब्ध है। खाजगी चित्र संग्रहालयों में मंदिरों में तथा महलों में भी चित्र पाये गये है।

धार में आनन्देश्वर मंदिर, धारेश्वर, राममंदिर व महलों से प्राप्त चित्र गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के चित्र खाजगी संग्राहालय में पाये जाते है।

मराठा राजाओं का कलाप्रेम उनके द्वारा निर्मित मंदिरो छत्रियों, भवनों एवं राजवाड़ों के स्थापत्य, मूर्ति एवं भित्ति चित्रों में देखा जा सकता है। अनेक संग्रहालयों में मराठा काल के पोथीचित्रों में रचित लघुचित्र भारतीय कला एवं संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

सन्दर्भ सूची :-

1. आर.ए. अग्रवाल– कला विलास – पृष्ठ क्रं. 05
2. जी.के. अग्रवाल–कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 17
3. पद्मश्री डॉ. वि.श्री. वाकणकर – अभिनन्दन ग्रंथ – पृष्ठ क्रं. 78–80
4. धर्मयुग – 30 सितंबर 1973 – पृष्ठ क्रं. 9–10
5. डॉ. जगदीश गुप्त–प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला–पृष्ठ क्रं. 52
6. आर.ए. अग्रवाल – कला विलास – पृष्ठ क्रं. 13
7. डॉ. मोतीचन्द्र – स्टडीज इन अर्ली इंडियन पेंटिंग
8. जी.के. अग्रवाल – कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 820
9. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास – पृष्ठ क्रं. 73
10. रायकृष्णदास – भारत की चित्रकला – पृष्ठ क्रं. 21
11. जी.के. अग्रवाल – कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 143
12. जी.के. अग्रवाल – कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 141,
13. आर.ए. अग्रवाल – कला विलास – पृष्ठ क्रं. 83
14. सरकार औरंगजेव – भाग 5 – पृष्ठ क्रं. 381
15. रघुवीरसिंह – पृष्ठ क्रं. 54, सरकार औरंगजेब भाग–5 – पृष्ठ क्रं. 382, दिघे– पेशवा बाजीराव प्रथम – पृष्ठ क्रं. 88
16. मालवा में युगान्तर – पृष्ठ क्रं. 271
17. फालके –शिन्दे शाही इतिहासाची साधना – वाल्यूम नं. 1 – पृष्ठ क्रं. 11
18. फालके –शिन्दे शाही इतिहासाची साधना – वाल्यूम नं. 3 – पृष्ठ क्रं. 20
19. कीन – एच.जी. माधवराव सिंधिया – पृष्ठ क्रं. 193
20. व्ही.व्ही. ठाकुर – होल्कर शाहीचा इतिहास – पृष्ठ क्रं. 71
21. फालके –शिन्दे शाही इतिहासाची साधना – वाल्यूम नं. 2 कवर